तृतीय अध्याय

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण : जनजीवन के परिप्रेक्ष्य में

तृतीय अध्याय

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण : जनजीवन के परिप्रेक्ष्य में

भूमिका

भारत पर हुए विदेशी आक्रमणों का मुकाबला करने में जहाँ भारतीय सैनिकों ने अपनी कर्तव्य तत्परता और बहादुरी दिखाई है। वहाँ दूसरी ओर यह भी दिखाई देता है कि सीमांचल प्रदेशों में निवास करनेवाले लोगों की स्थिति भी विविध रूप धारण करती हैं। इनका विवेंचन-विश्लेषण करना प्रस्तुत अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य है।

पारिवारिक प्रेम

प्रेम एक ऐसी संवेदना और मूल प्रवृत्ति है जो दुःख, दैन्य में आप ही आप उमड़ आती है। युध्दजन्य स्थिति में भी मानव की प्रेम भावना विवेच्य नाटककारों ने विविध रूपों में अभिव्यक्त की है -

1. माँ-बेटी

राजकुमार लिखित "जय बांड़ला" नाटक में ढ़ाका शहर के धान मंड़ी की गली में पाकिस्तान के सैनिक अन्याय कर रहे हैं। उनके पास बंगाल में रहनेवाले लोगों की फ़ेहरिस्त हैं। उन्हें मालूम पडता है कि युसूफ के घर में सोलह बरस की लड़की है जिसे बहुत काम की समझते हैं। मगर प्रत्यक्षतः उनके घर में सिर्फ़ छः बरस की लड़की है, यह देखकर संगीन पर झेलने के लिए उसे घर से बरामद करते हैं। तभी माँ फ़ातिमा की वात्सल्य भावना प्रकट होती है "सकीना···सकीना··· मेरी बच्ची। छोड़ दो उसे,,···छोड़ दो उसे,,····।"[1] अपनी बेटी के प्रति प्रेमभाव व्यक्त करते हुए वह पाकिस्तानी सैनिकों से उसे छोड़ देने के लिए कहती है। पाकिस्तानी सैनिकों का भारतीयों पर होनेवाला अत्याचार और माँ का बेटी के प्रति वात्सल्य

एक साथ दिखाई पड़ता है।

2· **पिता-पुत्री**

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में दर्शाया गया है कि रणक्षेत्र बोमदि ला के पास पहुँचते ही चीनी सैनिकों की निगरानी के कारण रोज़ को आगे बढ़ना मुश्किल था। बोमदि ला में होनेवाले रोज़ के पिता डैनिएल ओब्राएन्स के प्रेम के कारण रोज रूकने के लिए तैयार नहीं थी। रिपोरेटर विवेक अकेली को ज़ोखिम में ड़ालना नहीं चाहता था। यहाँ विवेक के मन में रोज़ के प्रति सहानुभूति की भावना दिखाई देती है। मगर पितृप्रेम के बारें में होनेवाला वक्तव्य रोज़ के शब्दों में - "यह क्षण रहस्य की एक पतली रेखा में बँधा है। इस पार रोज़ के प्राणों का खतरा है तो उस पार पिता के प्राणों का। इस पार मेरी जिन्दगी का सूनापन ललकार रहा है, तो उस पार शत्रु की बर्बरता अट्टहास कर रही है। मुझे उस पार जाना ही होगा विवेक!"[2] इसमें संदेह नहीं कि रोज़ अपने पिता से मिलने के लिए तड़प रही है। यह तड़पन उपर्युक्त अवतरण में स्पष्टतः झलकती है।

3· **पिता-पुत्र**

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में हर पात्र के मन में एक दूसरे के प्रति होनेवाली प्रेम भावना प्रकट हुई है। बोमदि ला जाने के लिए होनेवाले अन्य गुप्त मार्ग चीनी सरकार को मालूम हुए थे। टूरॉं ने भेद के बारें में खायी हुई कसम से शीकू ने महसूस किया कि चीनी सरकार धोखा देनेवाली है। फिर भी टूरॉं शीकू का इकलौता बेटा होने के कारण यह बात पुलिस को नहीं बताता। उसके प्रति होनेवाले ममत्व भावना ने शीकू के पैरों में ज़ंजीर ड़ाल दी। माँ के समान होनेवाली धरती के साथ विश्वाराघात कर रहे हो, ऐसा शीकू का मन कहता था फिर भी दिल ने हमेशा टूरॉं का साथ दिया। आत्मा की आवाज दबाकर वह गूँगा बना। पिता का पुत्र के प्रति यह प्रेम सात्विक है।

4· **बड़ा भाई-छोटा भाई**

"नेफा की एक शाम"नाटक में शिकार किये बड़े घडियाल को पूरे गाँव में घुमाने के पश्चात् फूल माला से ढ़का देवल पत्थर की चोट से गिर जाता है। तभी मातई ने बेटे के प्रति होनेवाले प्रेम को प्रकट करते हुए कहा कि कोई चोट तो नहीं आयी ?

गोगो के पुल उड़ाने के प्लान के अनुसार जिस्म पर बारूद की पट्टियाँ बाँधकर देवल जाना चाहता है। मगर नीमों इस बात से सहमत नहीं। क्योंकि बड़ा भाई होते हुए छोटा भाई ज़ोखीम का काम करे, यह उसे पसंद नहीं। तभी मन में होनेवाला भाई के प्रति प्यार नीमों के शब्दों में देखा जा सकता है - "मैं तुझ से बहुत प्यार करता हूँ रे। बड़ा भाई बाप की जगह होता है, देवल। मेरे रहते तू मौत के मुँह में नहीं जाएगा।"[3] गोगो का चीनियों का पुल उड़ाने का प्लान कार्यान्वित करने के लिए नीमों और देवल दोनों भाइयों में होनेवाली हलचल यहाँ दिखायी पड़ती है। मातई के दोनों बेटे एक दूसरे से प्यार करते हैं और विदेशी आक्रमण को रोकने का भी सक्रिय प्रयास करते हैं। यहाँ छोटा भाई अपने बड़े भाई के प्रति अपना प्रेम प्रकट करता दिखाई देता है।

5· **पत्नी-पति**

डॉ·रामकुमार वर्मा लिखित "जय बांड़ला" नाटक में ढ़ाका शहर के धान मंड़ी के गली में रहनेवाला यूसुफ़ अपनी दूकान बंद करने के लिए चला गया है, जो शाम होने के बाद भी वापस नहीं आया। इसलिए उनकी पत्नी फ़ातिमा चिन्तित है। क्योंकि वह पाकिस्तान के हाथों गिरफ्त हुआ है या नहीं ? यह उन्हें मालूम नहीं। यहाँ पति के प्रति पत्नी का प्रेम प्रकट होता है।

6· **पति-पत्नी**

चीनी सैनिक बच्ची सकिना के पीछे दौड़ते हुए फ़ातिमा को गोली मारते हैं। इतने में युसुफ़ घर आता है, तो उसे दिखाई दिया कि फ़ातिमा खून से लथपथ है। उसने घटी हुई घटना पति को बताई। यूसूफ़ अपना पूरा संसार उजड़ जाने

के कारण अपनी पत्नी के पीछे अकेला नहीं रहना चाहता। तभी हाथ में छुरा लेकर पत्नी के बारे में होनेवाला प्रेम प्रकट करते हुए युसुफ का वक्तव्य दृष्टव्य है - "फ़ातिमा। मैं तुम्हारे बगैर जिन्दा नहीं रहूँगा। मैं भी तुम्हारे पास आता हूँ। मैं भी आता हूँ।"[4] इतने में भारतीय मुक्ति फौज का एक सैनिक शिशिर दा आता है और उसे धीरज बँधता है, अतः युसुफ़ अपनी पत्नी के प्रति प्रेम विव्हल होते हुए भी राष्ट्रीय कर्तव्य से जागृत होकर मुक्ति फौज़ में दाखिल होता है। युसुफ़ का पत्नी प्रेम सहज और सरल है। लेकिन आत्महत्या की ओर झुकने वाला युसुफ़ सेनानी बन जाता है।

पारिवारिक जीवन

मानव का पारिवारिक जीवन आज की युध्द विभिषिका में विविध रूप रंगों में दिखाई पड़ता है। कभी वह कर्तव्य की प्रेरणा से प्रकट होता है तो कभी प्रेम और घृणा से दृष्टिगोचर होता है। इतना ही नहीं आज युध्दजन्य स्थिति में पारिवारिक असंतुलन भी दिखाई देता है।

1· कर्तव्य की प्रेरणा

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" नाटक में लड़ाई के समय आदिवासी लोगों के पास होनेवाली खाने की चीजे खत्म हुई हैं। इसलिए भारतीय सैनिक भूख और बीमारी से तड़फ रहे हैं। कई सैनिक देश के सामने भूख को महत्वपूर्ण स्थान न देकर दुश्मनों का सामना कर रहे हैं। मगर मातई का बड़ा बेटा नीमों अपने आप पर काबू नहीं रख सकता। पेड़ों की जड़े खाकर जिंदा न रहनेवालों के साथ हमारा कोई भी रिश्ता नहीं, हम अपना काम बिना किसी के मदद से कर सकते हैं। मुझे कभी-कभी क्या होता है मालूम नहीं ? यह सुनते ही मातई का मार्गदर्शनपरक वक्तव्य देखिए - "अंदर की आग दबा दे, मेरे बेटे! वह झूठी आग है।"[5] यहाँ मातई अपने बड़े बेटे को कर्तव्य का संदेश देती दिखाई पड़ती है। भूख मानव की मूलभूत प्रवृत्ति है, लेकिन राष्ट्रप्रेम के आगे भूख भी नगण्य है।

शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में विवेक संवाददाता का काम करता है। युध्दजन्य स्थिति में उसे दिल्ली में रहनेवाली अपनी बीमार माँ की पूछताछ करने के लिए फुर्सत नहीं मिलती। अतः उसके साथ होनेवाली तेजपुर के एक मिशन स्कूल की ऐंग्लो-इंडियन टीचर रोज़ विवेक को अपनी माँ को खत लिखने के लिए कहती है और उसे बेटे का माँ के प्रति जो कर्तव्य होता है, उसकी ओर आकृष्ट करती है। भारत पर चीन के हुए हमले से साधारण जनता भयभीत हुई है। बीमार माँ अपने बेटे की भी चिन्ता करती रही होगी। अतः बीमार माँ की पूछताछ करना और अपनी कुशल बताना ही आवश्यक है। इस दृष्टि से रोज़ की पत्र लिखने की सलाह उचित ही है।

2· <u>प्रेम और घृणा</u>

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में गूँगे शीकू के बारे में कैप्टन मोहनसिंह के मन में चीनी एजेण्ट होगा, ऐसा शक उदित होता है। क़बीले की देवी पर लाल रंग की ध्वजा चढ़ाते थे। इसलिए वह लाल रंग से मुहब्बत करता था मगर जैसे ही मालूम हुआ कि चीन का झंड़ा लाल है, वैसे ही लाल रंग गद्दारी की निशानी समझकर नफरत करने लगा। लाल रंग की चीज सामने देखते ही उस पर टूट पडता था और उसे तोड-मरोड़कर डाले बिना चैन की साँस नहीं लेता था।

चीनी सैनिक दूसरे रास्ते से बोमदि ला पहुँचे यह सुनते ही इस पाप का जिम्मेदार कौन ? यह सवाल शीकू के मन में उदित होता है। तभी जिसे जन्म देकर बड़ा किया उस पाप के घड़े को उसने खत्म करने का निश्चय किया और अवसर पाकर बेटे टूरों को खत्म कर दिया।

क्यूला शीकू के बेटे टूरों की पत्नी है। वह आजतक मानती थी कि टूरों देश के लिए जान हथेली पर लेकर लड़ रहा है। मगर जब असलियत मालूम होती है, तभी रोते शीकू को समझाते हुए क्यूला का वक्तव्य - "मैं सब समझती हूँ बापू। सब समझती हूँ। तुम इसलिए न रोते हो बापू कि मैं एक देशद्रोही धोखेबाज़ के बच्चे की माँ होनेवाली हूँ। हा-हा-हा-हा मैं देशद्रोही के बेटे की माँ होनेवाली हूँ। हा-हा-हा-हा देशद्रोही की! हा-हा-हा! वह धोखेबाज़ था! धोखेबाज़ था!"[6]

क्यूला पागलों की तरह चिल्लाती हुई चली जाती है। जिसने देश के साथ विश्वासघात किया उसके हर निशानी को मिटाना चाहती है।

गद्दारों के प्रति घृणा :

एखाद आदमी का दूसरे आदमी के बारे में होनेवाला विश्वास उड़ जाता है, तभी नफरत की भावना पैदा होती है। यह "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में दिखाया गया है। टूरॉं शीकू का इकलौता बेटा है। दोनों चाय बाग में नौकरी करते हुए खुशी से जीवन बिता रहे थे। इतने में टूरॉं की मुलाकात कलकत्ता के अंग्रेजी बाबू से होती है, तभी टूरॉं नौकरी की आशा से कलकत्ता चला जाता है। जहाँ देशद्रोही मुकुल से उनकी मुलाकात होती है। टूरॉं गद्दार बनकर देश के साथ विश्वासघात कर रहा है यह पिता शीकू को मालूम होते ही विश्वास नफरत में बदल जाता है। शीकू अपनी आत्मा का गला दबाकर गूँगे का स्वाँग रचाकर भारतीय सैनिकों के साथ रहता है और टूरॉं को ढूँढकर हत्या करता है। जिस छूरे से टूरॉं को मारा है उसी छूरे से मुकुल को मारना चाहता है मगर सरकार ने उसे पकड़ लिया है। टूरॉं की चीख सुनकर शीकू की बहू क्यूला वहाँ आ जाती है। उसे देखते ही रोने लगती है, क्योंकि वह उनका पति था। वह देश के लिए लड़ रहा है ऐसे कहकर उसके याद में चारो तरफ पागल बनकर भटक रही थी। मगर जब पिता ने बेटे की हत्या क्यों की ? यह बताया तभी पति के बारे में क्यूला के मन में नफरत की भावना पैदा होती है। अपने आपको देशभक्त की पत्नी समझनेवाली आज देशद्रोही की पत्नी बन गई।

3· पारिवारिक असंतुलन

"युध्दमन" नाटक में एक पढ़े-लिखे लेकिन आर्थिक दृष्टि से कुछ कमजोर परिवार का चित्र नाटककार ने खींचा है। प्रस्तुत नाटक के चौथे दृश्य में यह दर्शाया गया है कि भोजन का समय हो रहा है और बेटों के लिए माँ भोजन परोस रही है और अपने बेटों को खाना खाने के लिए बता रही है, उस समय नाटककार ने यह दर्शाया है कि यह बेटे कॉनवेंट में शिक्षा पा रहे हैं। लेकिन इनमें से कोई भी व्यवसाय, धंदा या नौकरी नहीं करते हैं। इस समय बेटों के पिता (पापा) यह बताते हैं कि तीन जवान लड़के घर में होकर भी फिर बाप को नौकरी करनी

पड़ती है और बेटे कुछ नहीं करते। उस समय ममा और पापा में कुछ वार्तालाप होता है। दोनों एक दूसरे को डाँटते हैं, लेकिन ममा अपने बेटे से कहती है - "खाना खाओ सनी, खाना!"[7] उस समय तीनों खाना खाते हैं। उस पर पापा हताश होकर कहते हैं कि इस युध्दजन्य स्थिति में जवान बेटों को युध्द में सैनिक भरती में शामिल होना चाहिए। इससे यह बेटे आफिसर बन जाते, देश की सेवा करते और घर की हालत भी सुधार जाती थी लेकिन ऐसा नहीं होता है। तीनों बेटे ममा के आदेश पर खाना खाने में मशगुल होते हैं। आखिर में तीनों बेटे एक साथ चिल्लाकर कहते हैं - "शट-अप, पापा! हम नहीं जायेंगे वार में! हमें डर लगता है वार से! वी आर नाट फ़ूल्स! वी आर नाट वारमोंगर्स! वी डोण्ट वॉण्ट टू डाई! वी हेट वार! वी हेट वार! वी हेट वार!"[8]

इस प्रकार "युध्दमन" नाटक में स्वातंत्र्योत्तर भारत की पुरानी और नयी पीढ़ियों का संघर्ष तथा असंतुलन उल्लेखनीय है।

सामाजिक जीवन

हमारे विवेच्य नाटककारों में विदेशी आक्रमण में आक्रांत प्रदेशों के सभी प्रकार के लोगों के जीवन को भी चित्रित किया है जो इसप्रकार हैं -

1· **बच्चों का जीवन**

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में तेजपुर में होनेवाले करतार सिंह के "स्नोव्हाइट" होटल में गोपाल बेयरे का काम करता है। युध्दजन्य स्थिति में वहाँ के सभी चायघर बंद होने के बाद भी वह अकेला फौजियों में चाय बाँटता है। यहाँ उसकी निड़रता दिखायी देती है।

"जय बाड़ला" नाटक में भारतीय नारी फ़ातिमा ने बाहर चला हुआ शोरगुल सुनकर सभी चीजें अन्दर रखी। तभी उनकी लड़की सकीना भी अपने गुड्डे को अंदर रखना चाहती है क्योंकि उन्हें ऐसे महसूस हो रहा है कि गोलियों की आवाज सुनकर ही वह जमीन पर गिर पड़ा है। युध्दजन्य स्थिति में यह दिखाई देता है कि उन पर भी युध्दजन्य स्थिति का अप्रत्यक्ष असर पड़ता है और वे अपनी प्रिय चीजों की ओर ध्यान देकर उनकी रक्षा में तत्पर रहते हैं।

2· छात्र-जीवन

"जय बांड़ला" नाटक में पाकिस्तान के सैनिकों ने 29 मार्च 1971 के रात को ढ़ाका विश्वविद्यालय के इमारत को आग लगाकर सोए हुए छात्रों पर गोलियाँ चलाई। अपनी जान बचाने के लिए कई छात्र टेबुल के नीचे छुपे थे मगर उन्हें भी गोलियों का शिकार बनाया। यह पूरा दृश्य पेड़ पर छिपकर बैठा हुआ छात्र धीरेंद्रनाथ देख रहा था। अध्यापकों, नोकरों को भी मार डाला। एक समय विद्या का केंद्र समझा जानेवाला आज स्मशान घाट बन गया है।[9] बाद में धीरेंद्रनाथ मुक्ति फौज के शिशिर दा से मिलता है और पाकिस्तानियों द्वारा सुधारानी पर किए गए अत्याचार का बदला लेने के लिए मुक्ति फौज में भरती होता है।

3· युवा जीवन

डॉ·शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में मानवता की भावना स्पष्ट की है। संकट के समय आदमी हमेशा दूसरे को धीरज देने का कार्य करता है। पिता ओब्राएन्स की मृत्यु के पश्चात रोज़ बार-बार रोती बैठ रही है। इसलिए संवाद-दाता विवेक ने उसे समझाया, मगर वह अपने दुःख को भूलने के लिए तैयार नहीं। तभी विवेक ने रोज़ को क्यूला का पति की राह देखने का उदाहरण दिया। यदि हम स्वयं ही दुःखी बनकर बैठ गए तो सामान्य लोगों को धीरज नहीं दे सकेंगे या उनका दुःख बाँट नहीं लेंगे। उस समय सामान्य लोगों की स्थिति किस तरह हुई है इसका वर्णन विवेक के शब्दों में - "पागल न हो जाए कहीं। न जाने इस लड़ाई में कितनी युवतियों के पति लौटकर नहीं आयेंगे।

कितने अबोध बच्चों की आँखें अपने पिताओं की प्रतिक्षा करती पथरा जाएँगी, कितनी माताएँ अपने लाड़लों के लिए घर की देहरी पर आँखें बिछाए बैठी रह जाएँगी।"[10] यह सुनकर भी रोज़ में परिवर्तन नहीं हुआ। तभी संकट की सच्ची शिक्षा वास्तविक रूप में मानव बनना है ऐसे कहते हुए मानवता की भावना प्रकट की है।

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" इस विवेच्य नाटक में भारतीय सैनिक नोशेर खाँ बाजासिंह के घर से बारिश रूकने के पश्चात चालीस गज जमीन भी पार नहीं कर सका होगा। इतने में एक औरत की आवाज सुनाई दी। वह मुसलमान औरत थी। जिन्होंने भाई कहकर राखी बाँधी और रूंधे गले से मुसीबत के समय रक्षा करने के लिए नोशेर खाँ से कहा। तभी नोशेर खाँ ने अपनी बहन से रक्षा करने का वादा किया।[11]

रक्षाबंधन एक भारतीय त्योहार है जो भारत की सांस्कृतिक विरासत है। यहाँ नाटककार ने यह भी दर्शाया है कि कश्मीरी मुसलमान कौम से मुसलमाना होकर भी भारतीय बन गए हैं। यहाँ एक भारतीय मुस्लीम नारी एक भारतीय मुसलमान सैनिक को राखी बाँधती है और उससे उसकी रक्षा की इच्छा व्यक्त करती है।

"नेफा की एक शाम" नाटक में भारतीय शीकाकाई का पूरा परिवार तवांग में दुश्मन का शिकार बन गया है। गुरिल्ला सरदार गोगो तुरन्त उन पर विश्वास न रखते हुए चौथी पहाड़ी के नीचेवाली ढलान की तरफ जाकर जानकारी हासिल करने के लिए कहता है। तभी दुश्मनों के प्रति क्रोध की भावना होने के कारण यह जोखिम का काम करने के लिए तैयार होती है। स्वातंत्र्योत्तर काल में सीमांचल प्रदेश की नारी जितनी राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत है, उतनी ही बहादुरी में भी है।

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में युध्द समाप्त होने के बाद क्यूला को अकेली छोड़कर एंग्लो इंड़ियन लड़की रोज़ रिपोर्टर विवेक के साथ तेजपुर जाना नहीं चाहती। विवेक देश को सावधान करने के लिए तेजपुर जा रहा है क्योंकि महान वीरों की अमर कहानियाँ लोगों को सुनाकर उनके मन में दृढता की भावना निर्माण

कर सके। रोज़ क्यूला के समान बेघर हुए लोगों को साथ लेकर ही तेजपुर जाना चाहती है। यहाँ उनकी कर्तव्य भावना दिखाई देती है। आज की युवा पीढ़ी कुछ आदर्श लेकर भी चलती है, युध्दजन्य स्थिति में सामान्य जनता को ढ़ाढ़स बँधने का प्रयास करती है और युवक युवती साथ मिलकर इसप्रकार का कार्य करती है यह बात आज की युवा पीढ़ी के लिए गौरवशाली है।

4· बूढों का जीवन

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में ओल्या वृध्द बाबा को साथ लेकर लोग जिधर गए हैं उधर जा रहा था। ओल्या को प्यास लगने के कारण झरने की तरफ जा रही उनकी माँ को चीनी राक्षस पकड़ लेते हैं। बेटे को भी पकड़ लेंगे इसलिए उसके माँ को बचाने का वृध्द ने प्रयास नहीं किया। क्योंकि अपने वंश को वह मिटाना नहीं चाहता।

इस प्रसंग में नाटककार ने संकेतित किया है कि युध्दजन्य स्थिति में बूढ़ों की हालत विचित्र हो गई है, न वे अपनी पत्नी की रक्षा कर सकते हैं, न चीनी दुश्मनों का मुकाबला कर सकते हैं। इतना ही नहीं इन बूढ़ों के मन में यह भी डर रहता है कि चीनी सैनिक अमानुष हमला करनेवाले दरिंदे हैं। अतः वे निरपराध बालकों पर भी हमला कर सकते हैं और भारतीय बूढों के वंशों के दिये को बूझा सकते हैं।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" नाटक में कर्तव्य का चित्रांकण किया है। भारतीय मातई ने दुश्मन जख्मी जासूस वांगचू की सेवा सुश्रुषा की। वह कौन है ? यह मातई को भी मालूम नहीं। मगर मातई का छोटा बेटा देवल उसे पहचानते ही मारना चाहता है। तभी मातई पहले माँ को मारो फिर मेहमान को ऐसे कहते ही देवल वांगचू को दुश्मन साबित करना चाहता है। उस समय मन में होनेवाले ममता के भाव मातई के शब्दों में - "वह चाहे सारी दुनिया का दुश्मन है, पर मेरा नहीं है। उसने मुझे माँ कहा है।"[12]

5· आतंक से भयावह जीवन

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में नाटककार शिवप्रसाद सिंह ने भारत-चीन युध्द के संदर्भ में पिंटो नामक एक ईसाई धर्मगुरू के मुँह से इस बात का उल्लेख किया है कि चीनियों का भारत पर आक्रमण शैतानियों का आक्रमण है और यह शैतान सदा इन्सानियत को नीचा दिखाने के प्रयत्न में है अतः चीन के इस आक्रमण के कारण युध्दजन्य परिस्थिति में रहनेवाली सामान्य जनता की भयावह स्थिति है। इतना ही नहीं कहीं पर सुरक्षा नजर नहीं आती है। इस युध्द में ऐसी स्थिति दिखाई देती है कि सभी लोग युध्द के भय से एक जगह से दूसरी जगह भागने का प्रयास करते हैं लेकिन दूसरी जगह पहुँचने पर भी यहीं स्थिति निर्माण होती है कि वहाँ के लोग भागनेवालों को भागने की प्रेरणा देते हैं। नतीज़ा यह होता है कि युध्दजन्य स्थिति में, एक जगह से दूसरी जगह भय की एक "चेन" बन जाती है।[13]

इस प्रकार हम देखते हैं कि चीनियों के भारत पर आक्रमण से युध्दजन्य भू प्रदेशों में सामान्य जनता भय के स्थिति में रहती है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" नाटक में भारतीय गुरिल्ला सरदार गोगो को पुल के पास कम्बल से ढँकी आकृति दिखाई देती है। शीकाकाई अपने आपको छुपाते-छुपाते मातई के झोंपड़ी तक आ जाती है, क्योंकि उनका पूरा परिवार चीनी लोगों का शिकार बन गया था। दुश्मन की ताकद बहुत बड़ी होने के कारण पूरा तवाँग बरबार हो गया था। दो दिन, दो रात तक लड़ाई होती रही। स्वयं को बचाने के लिए पीछे हटनेवाले लोगों को मजबूर होकर उनका सामाना करना पड़ा क्योंकि लाल चींटियों के झुण्ड के समान उनकी संख्या बढ रही थी।

चीन के नेफा पर हुए आक्रमण से सामान्य जनता भयभीत हुई है। लेकिन ऐसे लोगों को भी विवश होकर चीनियों का मुकाबला करना पड़ता है। यहाँ नाटककार ने यह भी चित्रित किया है कि जहाँ नेफा पर आक्रमण करनेवाले चीनी सैनिकों

की संख्या हजारों में हैं वहाँ सीमांचल प्रदेश के लोगों की संख्या बहुत कम है।

6· शरणार्थियों का जीवन

"युध्दमन" नाटक में नाटककार बृजमोहन शाह ने यह दिखाया है कि युध्दजन्य स्थिति में सरकार की तरफ से शरणार्थियों की सुख-सुविधाएँ देखी जाती है और उनकी हालत कुछ सुधर जाती है लेकिन युध्दजन्य स्थिति में साधारण आम आदमी की स्थिति बड़ी ही विचित्र होती है। युध्दजन्य स्थिति में साधारण आदमी को अपना पेट पालने के लिए कोई भी अवसर नहीं मिलता है। वह कुछ काम धंदा भी नहीं कर सकता है और इसी कारण वह रिफ्यूजी नहीं है यह जानकर उसे गिरफ्तार करते हैं। इस गिरफ्तार किए गए साधारण आदमी का बयान देखने लायक है वह पुलिवाले से कहता है - "रिफ्यूजियों की हालत हम से बेहतर है, साब····सभी कुछ तो मुहैया है इनको, वो भी फोकट में, लेकिन हमें एक वक्त का खाना, शर्म ढकने के लिए कपड़े नसीब हो जायें तो सौगात है।"[14]

नाटककार बृजमोहन शाह ने "युध्दमन" नाटक में युध्द के दुष्परिणामों को चित्रित किया है। युध्द एक ऐसी भयानक स्थिति है। इस स्थिति में युध्द करनेवाले लोग सामान्य जनता की कद्र नहीं करते हैं। वे उन्हें लूटते हैं। किसी के माँ-बाप पर गोलियाँ चलायी जाती है तो किसी माँ-बाप के सामने उनकी बेटियों पर बलात्कार भी किये जाते हैं। इतना ही नहीं जानबूझकर बुध्दिजीवियों पर भी गोलियाँ चलायी जाती है। एक जवान युवक की जबान को सुनिए - "हमारी जवान बहू-बेटियों को घेरकर ले जाते, उनको चिलम नंगा कर उनकी परेड करवाते। कहकहे लगाते थे। चित्त-पट्ट करके उनका चुनाव करते, हमारे सामने उनके साथ बलात्कार करते। बाप-बेटों को, माँ-बेटियों के सामने गोली से उड़ा देते। चुन-चुनकर बुध्दिजीवियों को ले जाते और गोली भरकर मार देते। हमारी दुकानों और घरों में रात-आधी-रात घुसते, लूटपाट करते, फिर बारूद डालकर उड़ा देते।"[15]

7· वेश्या गमन

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में सैनिकों के समान ही जनसामान्य लोगों का चित्रण किया है। कैम्प की तरफ जाते समय पाकिस्तानी मुजाहिद

जालिम खाँ पाकिस्तानी मौलवी को देखकर सोचने लगा है कि शादी और जनाजा उठाते समय मौलवी की आवश्यकता होती है। मगर ऐसी कोई भी बात नहीं है। तभी मौलवी ने बताया कि इस्लाम को जहाँ खतरा पैदा होता है वहाँ मौलवी की आवश्यकता होती है। मौलवी को पुरिया-शंकर सुनाते समय मलकाबाई का कोठा और जवानी के दिन याद आ रहे हैं। सामान्य आदमी ही मलकाबाई के कोठे की तरफ नहीं जाते, बल्कि अयूब खाँ और भुट्टो के समान बड़े-बड़े लोगों की भी आदत उस कोठी की ओर जाने के लिए लालायित होती है।

विदेशियों से नफरत

भला ऐसा कौनसा देश है कि जो विदेशियों के आक्रमण को सह सकता है। विवेच्य नाटकों में भी विदेशियों से नफरत की भावना भारतीयों के मन में हैं। जिसकी अभिव्यक्ति इसप्रकार की गयी है।

1· लाल रंग से नफरत

डॉ·शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में हर आदमी को अपना कार्य सतर्क रहकर करना चाहिए ऐसा बताया है। हिमालय के आसपास युध्द का वातावरण तैयार हुआ है क्योंकि चीनी लोग भारत पर आक्रमण कर रहे हैं। तेजपुर होटल के पास लाल रंग से नफरत करते हुए भारतीय गूँगे शीकू को देखकर ऐसा लगता है कि मानो वह चीनी एजंट है। बोमदि ला रिपोर्टर विवेक और रोज़ आते हैं तभी गुप्त मार्ग से शीकू वहाँ पहुँच जाता है। मानों ऐसे लगता है कि बाधा पहुँचाने के लिए तो यह पिछा नहीं कर रहा। इस तरह के एब्नॉर्मल लोगों का कोई भरोसा नहीं होता क्योंकि वह लाल चीज देखते ही तडफ उठता था।"[16]

यहाँ शीकू का कार्य-व्यापार भारत पर हुए चीनी आक्रमण से नफरत व्यक्त करनेवाला है। चीन का राष्ट्रध्वज लाल रंग का है। अतः वह लाल रंग से नफरत करता है।

2· जासूसी से नफ़रत

"नेफा की एक शाम" नाटक में मातई का बड़ा बेटा नीमों की मुलाकात गूँगी सुहाली से जब से हुई है तब से घर में वह माँ के साथ सही बर्ताव नहीं करता। इसलिए मातई सुहाली से कहती है कि अगर तूने मेरा घर नीमों को अपने जाल में फँसाकर बरबाद किया तो तुझपर सौ बिजलियाँ गिरेंगी।[17]

सुहाली चीनी जासूस है और नीमों के साथ प्रेम का नाटक कर वह गुप्तचर का काम आसानी से करती है। प्रारम्भ में सुहाली जासूस है इसका पता किसी को भी नहीं है लेकिन नाटक के तीसरे अंक में यह रहस्य उद्‌घाटित होता है और उसका प्रियकर नीमों ही उसे अपनी बंदूक की गोली से मार डालता है। यहाँ सुहाली के प्रति मातई का शक और सुहाली के प्रति मातई की नफ़रत उल्लेखनीय है।

3· सैनिक से नफ़रत

मातई जख्मी चीनी दुश्मन वांगचू की सेवा शुश्रुषा करती है। वांगचू भारतीय गुरिल्ला सरदार गोगो के दल की जानकारी किसीने नहीं बताई तो गोली मारकर उन्हें खत्म करना चाहता है। वह मातई की बोली बंद करने के लिए पिस्तोल की मूठ का आघात मातई पर करता है। उस समय मातई का वक्तव्य - "मुझे भी मार डाल। पापी, नीच! भूल गया वह घड़ी जब तू घायल था ?····मैंने तेरे घावों पर शहद लगाया····तुझे प्यार से बेटा कहा और तू हमें यह बदला दे रहा है ? प्यार के बदले में खून ? मुहब्बत के बदले में गोली ? यही तेरे देश का रिवाज है रे ?"[18]

यहाँ यह दिखाई देता है कि चीनी सैनिक कृतघ्न है और इसीकारण मातई भी चीनी सैनिक वांगचू से जहाँ एक बार उसे अपना बेटा कहती है वहाँ वांगचू की कुटिल नीति देखकर उससे नफ़रत करती है।

4· आक्रमण के प्रति नफ़रत

डॉ·रामकुमार वर्मा लिखित "जय बांड़ला" नाटक में नफ़रत की भावना को भी चित्रित किया है। फ़ातिमा की लड़की सकीना के तरह-तरह के खिलौनों

में से काठ से बनाए रंगीन घर में उनका गुड्डा रहता है। वह पाकिस्तानी सिपाहियों को गुड्डा नहीं देना चाहती। वह भी इस गुड्डे के साथ रह सकते हैं ऐसी मनोकामना माँ फ़ातिमा के सामने व्यक्त करते ही अत्याचारी पाकिस्तानी लोगों के बारे में भारतीय फ़ातिमा का वक्तव्य - "वे रहेंगे ? अगर पाकिस्तानी सिपाही ऐसे होते तो अपना बाड़ला देश भी तो उनके लिए एक खूबसूरत घर हो सकता था। लेकिन वे लोग तो जालिम हैं। वे मुहब्बत से रहना नहीं जानते, शैतानों की तरह आग लगाना जानते हैं।"[19]

फ़ातिमा वास्तव में एक मुसलमान नारी है। बाड़ला देश के निर्माण के पहले वह पाकिस्तानी भी है। लेकिन जब पश्चिमी पाकिस्तान के लोग पूर्व पाकिस्तान पर हमला करते हैं तब पूर्व पाकिस्तानी और पश्चिमी पाकिस्तानी - दोनों में दुश्मनी का नाता निर्माण होता है और इसीकारण फ़ातिमा पूर्व पाकिस्तान के हमले का धिक्कार करती है और नफ़रत करती है वस्तुतः बांगला देश के निर्माण के पश्चात यह भी स्पष्ट हुआ है कि वे दोनों विदेशी बन गए हैं क्योंकि बांगला देश अब स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में 1971 में निर्माण हुआ है। अतः बांगला देश की फ़ातिमा का पाकिस्तान के प्रति विरोध या नफ़रत एक देश की नारी की दूसरे देश के प्रति नफ़रत है।

जनसाधारण के रूप में सैनिक

यद्यपि सैनिक सैनिक है। राष्ट्र की हिफ़ाजत करना उसका कर्तव्य है फिर भी वह इन्सान है और इसीकारण उसकी स्थिति प्रासंगिक रूप में साधारण मानव जैसी दिखाई पडती है। यथा -

1· माँ-बेटा स्थिति

"नेफा की एक शाम" में भारतीय सैनिकों की कमजोरी दिखायी देती हैं। भारतीय सैनिकों को भूख सता रही हैं। लेकिन सभी ने उसे प्रकट नहीं किया। नीमों एक ऐसा भारतीय सैनिक है कि थोडे से अपोंग से उनके पेट की आग नहीं बूझती। इसलिए भूख और बीमारी के कारण लड़ाई कैसे जितेंगे ऐसे नीमों को लगता है मगर मातई की दृष्टि से लड़ाई जारी रखना महत्वपूर्ण है।[20] नीमों भूख के

मारे तड़प रहा है इसलिए लड़ाई में भाग नहीं लेना चाहता।

यहाँ हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि यद्यपि मातई का बड़ा बेटा नीमों एक सैनिक है लेकिन सैनिक के साथ ही साथ वह एक साधारण आदमी भी है। भूख के कारण युध्दजन्य स्थिति में भी युध्द न करने का उसका इरादा उसके साधारण मानव का ही द्योतक है। आखिर मातई की प्रेरणा से वह अपनी कर्तव्य की ओर आकृष्ट होता है।

"युध्दमन" नाटक में बृजमोहन शाह ने यह भी दर्शाया है कि कोई सोल्जर सोल्जर होने पर भी एक साधारण आदमी भी होता है। इस दृष्टि से इस नाटक में यह दर्शाया गया है कि युध्दजन्य स्थिति में यह सोल्जर अपनी बूढ़ी बीमार माँ को देखने के लिए छुट्‌टी पर आता है तब भावना विवश होकर माँ भी कहती है कि मुझे यकिन था कि तू जरूर आएगा। माँ की बूरी हालत देखकर बेटे को भी अफसोस होता है और वह भी कह देता है कि तुम्हारी यह हालत मैं देख नहीं पा सकता हूँ और इसीकारण मैं नहीं आना चाहता था फिर भी तुम्हारी ममता के कारण आ गया हूँ। उस समय मोम कहती है कि अब तुम यही रहो, लेकिन सोल्जर बेटा कहता है कि मुझे जाना ही पड़ेगा और तुम्हारी मौत यहाँ होगी तो मेरी मौत जंग के मैदान में होगी। बेटे के यह शब्द सुनकर मोम जोर से चिखती है और अपने बेटे सोल्जर से चिपक जाती है इतने में मिलिट्री पुलिस आ जाता है और बेचारे सोल्जर को अत्यंत विवश होकर जंग पर जाना पड़ता है उस समय सोल्जर चिखता है - मोम····मो···म···मर·····रही······है। मोम मर रही है।"[21]

2· <u>पत्नी-पति स्थिति</u>

"नेफा की एक शाम" के गुरिल्ला आदिवासी दल के सैनिक देवल और शीकाकाई दुश्मन के बड़ी रसद चौकी पर हमला करने के लिए गए हैं, मगर श्याम होने के बाद भी वापस नहीं आए। गुरिल्ला सरदार गोगो चिंतित है, क्योंकि कल की लड़ाई में नीमो और गोगो बचे थे। सैनिक जोरम के द्वारा हमला खाली गया यह मालूम हुआ। तभी देवल शीकाकाई के प्यार के बारे में गोगो को शक होता है। शीकाकाई ने गोगो का शक दूर करने का प्रयास किया मगर वह मानने के

लिए तैयार नहीं हुआ। गोगा कहता है कि प्यार की धड़कनों में जंग को महत्वपूर्ण स्थान नहीं।[22] यहाँ मातई का छोटा बेटा देवल यह बताना चाहता है कि युध्दजन्य स्थिति में सैनिक का काम युध्द में कूद पड़ना है ही लेकिन साथ ही साथ क्या सैनिक किसी नारी का पति नहीं होता है ? अर्थात होता है। शीकाकाई उसकी पत्नी है और उन दोनों का एक दूसरे के प्रति अटूट प्रेम हैं। इन दोनों को चीनियों के रसद की जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा जाता है लेकिन उन्हें वापस लौटने में इसलिए देर होती है कि चीनी सैनिकों की एक गोली देवल को लग जाती है और उसकी सेवा शुश्रुषा पत्नी के नाते शीकाकाई करती है। इसप्रकार नाटककार ने यह दिखाया है कि भले ही देवल एक सैनिक है फिर भी एक आदमी है। शादीशुदा है और इसीकारण उन दोनों का प्रेम सहज प्रेम है।

3· पति-पत्नी स्थिति

भारतीय गुरिल्ला सरदार गोगो को शीकाकाई के कारण हमला नाकामयाब हुआ ऐसे लगता है। इसलिए वह आज से भारतीय सैनिक देवल के साथ नहीं रहेगी ऐसा कहते ही प्रेरणादात्री शीकाकाई के बारे में देवल का वक्तव्य - "अगर तुम यही चाहते हो तो यही होगा। लेकिन इतना समझ लो, शीकाकाई मेरे रास्ते का पत्थर नहीं, मेरी ताकद है।"[23] यहाँ भी देवल का अपनी पत्नी शीकाकाई के प्रति प्रेम दिखाई पड़ता है। सैनिक अवश्य सैनिक होता है लेकिन गृहस्थाश्रमी सैनिकों के जीवन में वह सैनिक प्रासंगिक रूप में एक साधारण मानव बन जाता है। कुछ क्षण के लिए।

4· प्रेमी-प्रेयसी

भारतीय आदिवासी दल का सैनिक नीमों गूँगी सुहाली को देखते ही उसकी सुंदरता के कारण मोहित हुआ है। वह सुहाली को इतना बेहद प्यार करता है कि - "सोन-कबूतरी" कहकर उसके लिए माँ, भाई और घर-बार तक छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है। नीमों अपोंग पिकर बेहोश हो जाने पर वह सुहाली अन्य लोगों से आँखें लड़ाती है भाई देवल के इस बात पर उनका विश्वास नहीं। इसलिए नीमों देवल को क्रोध से मारने के लिए तत्पर होता है।उसे प्यार के सामने अपने लोग भी दुश्मन लगते हैं।

यहाँ नाटककार ने यह दिखाया है कि नीमों एक सैनिक जरूर है लेकिन साथ ही साथ वह एक प्रेमी है सुहाली के प्रति उसका प्रेम भले ही अंधा प्रेम है लेकिन एक साधारण आदमी के रूप में उसका प्रेम सहज है।

5· बगावत की बू से नफ़रत

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" इस नाटक में पाकिस्तानी मुजाहिदों का हथियार छोड़कर भाग आना एक तरह से कमजोरी ही हैं। क्योंकि दुश्मन की चौकी पर हमला करने के लिए कप्तान आनेवाला है। चौकी के आसपास की जानकारी हासिल करने में भी वह कामयाब नहीं हो सके।

पाकिस्तानी मुजाहिद नूर खाँ के बारे में पाकिस्तानी मुजाहिद ज़ालिम खाँ को शक होने के कारण उस पर गोली चलाता है मगर लाश कहीं नहीं मिलती। कप्तान को यह बात जालिम खाँ ने बताई तभी वह सोचने लगता है क्योंकि उसने तो नूर खाँ को गाँव को आग लगाने के लिए भेजा था। फौलाद के समान होनेवाली लोगों की दीवार के सामने पाकिस्तान का कोई बस नहीं चलेगा इसलिए दम घोंटनेवाली दुनिया में जिन्दा न रहते हिन्दुस्तान के आजाद इलाके में नूर खाँ साँस लेना चाहता है। तभी मन में उदित हुआ शक कप्तान के शब्दों में - "तुम अजीज जरूर हो नूर खाँ लेकिन इसलाम से जादा नहीं। तुम्हारी बातों में बगावत की बू आती है और इसको बरदाश्त कर सकना मेरे लिए मुश्किल है।"[24]

यहाँ नाटककार ने कप्तान के मुँह से यह स्पष्ट किया है कि मुजाहिद नूर खाँ पाकिस्तानी मुजाहिद होकर भी उसे हिंदुस्तान के प्रति आस्था है। यद्यपि उसे भारत के गाँव को जलाने का आदेश दिया जाता है जिसका पालन करना एक सैनिक के रूप में उसका कर्तव्य है फिर भी एक साधारण आदमी के रूप में कप्तान के आदेश का पालन नहीं करता क्योंकि नूर खाँ युध्दपिपासू व्यक्ति नहीं है और उसका युध्द पिपासू न होना एक पाकिस्तानी सैनिक होकर भी साधारण आदमी का द्योतक है।

6· कृतज्ञता

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" में धरती माँ, माँ के बारे में ममत्वमयी विचार व्यक्त हुए हैं। बर्फीली चट्टान पर पड़े भारतीय फौजी को गुरिल्ला आदिवासी सरदार गोगो मातई के झोंपड़ी के पास ले आता है। दुश्मन पीछा न करे इसलिए भारतीय सैनिक नीमों ने पैरों के निशान मिटाए हैं। मातई फौजी को बेटा समझकर सेवा करती है। देश की हिफ़ाजत करना मेरा पहला आद्य कर्तव्य है ऐसामानते हुए सभी का एहसानमानकर भारतीय फौजी जाने के लिए तैयार होता है। उस समय मातई के बारे में होनेवाली ममत्व भावना भारतीय फौजी के शब्दों में - "अगर जिन्दा रहा तो एक बार मैं फिर तुम्हारी झोंपड़ी में आऊंगा और तब मैं तुम्हें माँ कहकर तुम्हारे पैरों की धूल अपने माथे पर लगाऊँगा।"[25] यहाँ मातई के बारे में होनेवाली कृतज्ञता फौजी व्यक्त करता है। उसका यह कृतज्ञता भाव आम आदमी की नियती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि -

1· हमारे विवेच्य नाटककारों ने जहाँ एक ओर विदेशी आक्रमणों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने की कोशिश की है, वहाँ दूसरी ओर उन्होंने जनसाधारण की ओर भी ध्यान दिया है, जो उचित है।

2· युध्दजन्य स्थिति में साधारण जनता की मनःस्थिति को चित्रित करने में नाटककारों ने अपनी कलम चलाकर यह दिखाया है कि युध्दजन्य स्थिति का सबसे बड़ा असर अगर किसी पर पड़ता है तो वह साधारण जनता पर ही।

3· विवेच्य नाटकों में यह प्रतिपादित किया गया है कि युध्दजन्य स्थिति में मानव के मन में विविध प्रकार के मनोविकार उत्पन्न होते हैं। इन मनोविकारों में पारिवारिक अपना विशेष महत्व रखता है।

4· इसके अतिरिक्त यह भी दर्शाया गया है कि मानव का पारिवारिक जीवन हलचल से भरा रहता है लेकिन उस जीवन में भी साधारण जनता को कभी कर्तव्य की प्रेरणा मिलती है तो कभी एक दूसरे के प्रति प्रेम और घृणा को व्यक्त करते दिखाई देते हैं। इतना ही नहीं पारिवारिक असंतुलन को दिखाना नाटककार नहीं भूले हैं।

5· विवेच्य नाटकों में युध्दजन्य स्थिति में बच्चे, छात्र, युवक, बूढ़े आदि पर क्या असर पड़ता है? इस पर भी प्रकाश डाला गया है। शरणार्थियों के जीवन की विशिष्टता और वेश्यागमन की अधिरता को भी व्यक्त किया गया है।

6· विवेच्य नाटकों में विदेशियों से नफ़रत स्वाभाविक रूप में व्यक्त की गई है।

7 एक महत्वपूर्ण बात यह भी दिखाई गयी है कि सैनिक कितना भी शूर-वीर क्यों न हो ? फिर भी वह एक मानव भी है। अतः साधारण मानव में युध्दजन्य स्थिति में जो कुछ संवेदनाएँ प्रकट होती है उनको चित्रित किया गया है। जो एक विशिष्ट उपलब्धी है।

सं द र्भ

1· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·22, प्र·संस्क·1971

2· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·48, तृ·संस्क·1965

3· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·116-117, सप्त·संस्क·1980

4· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·24, प्र·संस्क·1971

5· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·83, सप्त·संस्क·1980

6· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·123, तृ·संस्क·1965

7· युध्दमन - बृजमोहन शाह, पृ·51, प्र·संस्क·1976

8· वही, पृ·52-53

9· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·54-55, प्र·संस्क·1971

10· घाटियाँ गूंजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·83, तृ·संस्क·1965

11· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·77-78, दि·संस्क·1970

12· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·57, सप्त·संस्क·1980

13· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·43, तृ·संस्क·1965

14· युध्दमन - बृजमोहन शाह, पृ·24, प्र·संस्क·1976

15· वही, पृ·26

16· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·38, तृ·संस्क·1965

17· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·14, सप्त·संस्क·1980

18· वही, पृ·69

19· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·13, प्र·संस्क·1971

20· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·79, सप्त·संस्क·1980

21· युध्दमन - बृजमोहन शाह, पृ·56, प्र·संस्क·1976

22· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·100, सप्त·संस्क·1980

23· वही, पृ·101

24· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·40, दि·संस्क·1970

25· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·95, सप्त·संस्क·1980